ISSN 2278-5914

"Education for Knowledge, Character and Value Preservation"

Koregaon Education Society Koregaon's

Shankarrao Jagtap Arts and Commerce College, Wagholi

Organized

National Conference

on

India After Independence: Issues and Challenges

on

14th February 2025

SATARA ITIHAS SANSHODHAN MANDAL,SATATRA'S

SANSHODHAN

SPECIAL ISSUE

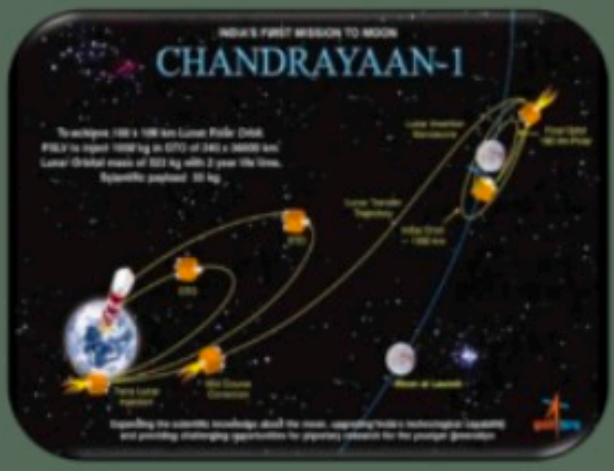

February 2025

SANSHODHAN

PEER REVIEWED
RESEARCH JOURNAL
SPECIAL ISSUE
February 2025
ISSN 2278-5914

संशोधन

पिअर रिव्हयूड
रिसर्च जर्नल
विशेष अंक
फेब्रुवारी २०२५
आय.एस.एस.एन.: 2278-5914

* **Publisher : Prin. Dr. Rajendra More**
President,
Satara Itihas Sanshodhan Mandal, Satara

* Printer : *Akshay Printers, Satara*

* **Publication Date : 14th February 2025**

* **Donated Value : Rs. 350 /-**

(All rights reserved under the Satara Itihas Sanshodhan Mandal, Satara) (The views expressed by the authors in 'Sanshodhan' Reaserch Journal in this issue are their own. The editor and publisher are not responsible for them.

132.	श्री. जमदाडे निलेश प्रकाश डॉ. राजेंद्र भिमाजी सातपुते	सातारचे छत्रपती शाहू महाराज आणि कोल्हापूरकर संभाजी यांचे संबंध :एक ऐतिहासिक अभ्यास	561
133.	प्रा.देबडे सतिश मारोतिराव	वनहक्क कायदा (२००६)व त्याची अंबलबाजावणी	564
134.	प्रा.डॉ.तृप्ती धुमाळ श्री.ईश्वर डुबे	महिला सक्षमीकरण, आदिवासी महिला सक्षमीकरण: एक नवा अध्याय	566
135.	श्री. नारायण रामलाल उंबरे डॉ. रमेश नामदेव शेवाळे	भारताच्या संसदिय राजकारणातील प्रगल्भ नेतृत्व – सुशीलकुमार शिंदे	572
136.	प्रा.दिलीप भिमराव वाघमारे डॉ.आप्पा दत्तू माने	स्वातंत्र्यानंतरच्या मराठी साहित्यात स्त्रीवादी जागरूकतेतील बदल	579
137.	श्री. सोनी दिपक मोरे	ग्रंथालय क्षेत्रातील आधुनिकता : तंत्रज्ञान आणि विकास	588
138.	डॉ.लक्ष्मण भीमसेन दोडमनी	क्रीडा - स्वातंत्र्योत्तर भारतातील राष्ट्रीय एकात्मता व ऐक्य साधन	591
139.	प्रा.महात्मे देवदत्त महादेव	भारतीय समाजात खेळ आणि शारीरिक शिक्षणाची सद्यस्थिती – एक अभ्यास	596
140.	संगीता बाबासो माने	भारतीय संविधान आणि महिला सक्षमीकरण: एक अभ्यास	600
141.	श्री. विनोद देविदास वाघ डॉ. नाथा रामभाऊ मोकाटे	स्वातंत्र्याची पहाट व स्वतंत्र भारतातील समस्या	607
142.	डॉ. सचिन नारायण बोराडे श्री. उमेश रमेश अंडिल	राजर्षी शाहू महाराज व छत्रपती राजाराम महाराज यांची सामाजिक बांधिलकी	611
143.	डॉ.कमलसिंग विक्रमसिंग क्षत्रिय	कृष्णाकाठावरील वडूथ-आरळे येथील हेमाडपंथी शिवमंदिरे	614
144.	संगीता कनकाप्पा चंदनवाले सुप्रिया संभाजी चौगले श्री. विद्यानंद संभाजी खंडागळे	प्राथमिक स्तरावरील महिला शिक्षकांना येणाऱ्या कौटुंबिक, सामाजिक व आर्थिक समस्यांचा अभ्यास	618
145.	श्री. निलेशकुमार गुरव	आभासी चलनातील धोके	622
146.	प्रा. वसंत पुंडलिकराव नंदगिरीकर	डॉ. सुशीला टाकभौरे के 'संघर्ष' कहानीसंग्रह में सामाजिक सरोकार (शैक्षिक चिंतन के संदर्भ में)	626
147.	Dr. Dasharath Rajaram Deshinge	Shooting Ability in Handball Players: A Study on Shivaji University Handball Players	630
148.	Dr. Pravin A. Powar	Emerging India: Leadership in a Changing World	633
149.	Dr.Patil (Dange) Deepak	Psychological Practice- for Athletes Better Performance	636
150.	डॉ. सचिन तानाजीराव पाटील	भारतातील शारीरिक शिक्षणाचा विकास (पूर्व-स्वातंत्र्य)	639
151.	डॉ. प्रशांत बिभिषण पाटील	खेळ आणि खेळांद्वारे राष्ट्रीय एकात्मता	641
152.	Dr. S. R. Mane Dr.D.S. Patil (Dange)	The influence of Aerobic Exercise Program on Blood Lipids Profile in Obese Lady Teachers	644
153.	Dr.Sharad Bansode Mr.Tanaji Ramdas Sabale	Importance of Yoga and Meditation in Mental and Physical Performance of Youth	648
154.	Dr. Shilpa Chowdhary	Challenges for a Novice Learner of English Language	651
155.	रेड्डी रामकृष्णा सतीशरेड्डी डॉ. चंदू लक्ष्मण खंदारे	मरंग गोडा नीलकंठ हुआ उपन्यास की मूल समस्या	655
156.	कु.खराडे निकिता सुनिल	महिला किसान सशक्तिकरण परीयोजना उद्दिष्टे आणि धोरण	658
157.	श्री. शरद ठोकळे	महात्मा जोतीराव गोविंद फुले यांचे शेतीविषयक विचार	664
158.	Dr. Amieetraj Uttamrao Mane	A Comparative Analysis of Indian & Pakistani Cricketers Autobiographies	669
159.	Dr. Vidya C. Patil	Career opportunity in sports for women in India	672
160.	Mr.Pramod R. Chavan	The Effect of Long-Distance Running on Bone Strength	675
161.	Dr. Shivraj Ramchandra Gaikwad	The Evolution of Football in India: A Century of Progress and Challenges Since Independence	679
162.	प्रा.राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे	"भाषाई समाज: प्रायोगिक भाषा मिश्रण और भाषा परिवर्तन एक चिकित्सक अभ्यास " (दलित आत्मकथा 'मणिकर्णिका'के विशेष संदर्भ में)	681
163.	डॉ. दिपक जाधव	हिंदी दलित आत्मकथाओं में चित्रित पारिवारिक व्यवस्था	690
164.	Shri.S.S.Kumkar	Personality Development Through Yoga	694

163. हिंदी दलित आत्मकथाओं में चित्रित पारिवारिक व्यवस्था

डॉ. दिपक जाधव
वेणूताई चव्हाण कालेज,
कराड, जिला- सातारा

पारिवारिक व्यवस्था से अभिप्राय है- परिवार के प्रमुख की स्थिति, परिवार में किसकी सत्ता चलती है या परिवार के मुखिया के रूप में कौन है। सामान्य रूप से परिवारों में इसके दो पर्याय उपलब्ध होते हैं- ऐसे परिवार जिसमें पिता/पुरुष प्रमुख हो, परिवार के व्यवहार और सदस्य उससे ही नियंत्रित हो एवं उसी के मनोनुकूल परिवार चलता हो; इस स्थिति को पितृसत्तात्मक व्यवस्था कहा जाता है। इसके विपरीत जहाँ परिवार में माता या स्त्री प्रमुख हो, परिवार संबंधी निर्णय में उसकी अहम भूमिका हो तथा परिवार उसके मनोनुकूल चलता हो; ऐसी स्थिति को मातृसत्तात्मक व्यवस्था कहा जाता है।

भारतीय सामाजिक, पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक व्यवस्था के बारे में हम कह सकते हैं कि यह पारिवारिक व्यवस्था मुख्यतः पितृसत्तात्मक व्यवस्था रही है। मध्यकालीन भारतीय समाज में जिस 'मनुस्मृति' को समाज विधान के रूप में मान्यता मिली, उसमें स्पष्ट निर्दिष्ट है कि

" पिता रक्षति कौमारे, भार्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति।।"[1]

इस प्रमाण के अनुसार नारी अगर हर हाल में पराश्रित, परजीवी, परावलंबी रही है तो उसकी सत्ता होने का प्रश्न ही निर्माण नहीं होता। इस तथ्य के आधार पर भारतीय समाज की मूल पारिवारिक व्यवस्था पितृसत्तात्मक रही है, यह बात स्पष्ट हो जाती है।

आधुनिक युग में समाज विधान के रूप में संविधान की प्रतिष्ठापना होती है। व्यक्ति की स्वतंत्रता, अस्मिता व्यक्ति का महत्व पूर्ण अधिकार बन जाता है। इस रूप में न केवल पुरुष बल्कि स्त्री भी स्वतंत्र व्यक्ति और अस्तित्व के रूप में उभरती है। परिणामतः परिवार का हिस्सा होने के बावजूद वह स्वतंत्र अस्तित्व भी बन जाती है। कानूनन उसे सामाजिक, पारिवारिक अभय प्रदान किया और सत्ता एवं संपत्ति में उसकी उपस्थिति को संबल प्रदान किया गया है। इसका भरपूर प्रभाव समाज और समाज व्यवस्था पर पडा।

हिंदी दलित आत्मकथाओं में भारतीय समाज के शहरी और ग्रामीण दोनों परिवेशों का चित्रण हुआ है। इन आत्मकथाओं में मुख्यतः दलित जीवन चित्रित किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में जहाँ सवर्ण समाज का दलित जीवन से संबंध रहा, वहाँ सवर्ण समाज भी वर्ण्य विषय बना है। दलितों को दबाने, कुचलने तथा उन्हें मानवीय अधिकारों से वंचित रखने का कार्य सवर्ण समाज द्वारा परंपरागत, धार्मिक, सामाजिक रूढ़िवादी मानसिकता के चलते हुआ है। यहाँ पारिवारिक व्यवस्था का अध्ययन किया जा रहा है, जो सत्तात्मक व्यवस्था को उद्घाटित करता है।

पारिवारिक सत्ता के अंतर्गत पुरुष सत्ता एवं स्त्री सत्ता मुख्यता आती है। मनुस्मृति के अनुसार भारतीय समाज व्यवस्था पुरुष सत्तात्मक रही है। इसका तात्पर्य है कि पुरुष सत्ता स्त्री, परिवार, संपत्ति, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता पर थी। इस व्यवस्था में परिवर्तन होने से तात्पर्य है- परिवार, संपत्ति, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता में पुरुष के बजाय स्त्री का प्रभाव होना। इस बदलाव में स्त्री की भूमिका परिवर्तनीय है। इसलिए दलित या सवर्ण दोनों परिवारों की स्त्री के जीवन अधिकारों, भागीदारी, परिवार संबंधी निर्णयों में भूमिका पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है।

कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में तीन पीढ़ियों का वर्णन है। इस रूप में नानी, माँ और स्वयं लेखिका आदि तीन पीढ़ियों की पारिवारिक स्थिति वर्णित है। लेखिका की नानी अपने पति मोड़कूजी से अलग होकर बिना किसी पुरूष की सहायता के अपने बच्चों की परवरिश करती है। इतना ही नहीं पति के निर्णय का विरोध करते हुए अपनी बेटी भागीरथी का विवाह भी वह अपने पसंद के लड़के से करती है-

" लड़का अनाथ है और उसे बावने उपजाति की औरत ने पाला है। मैं अपनी लड़की अनाथ लड़के के साथ नहीं ब्याहुँगा।"[2] - मोडकुजी

" आजी अपने निश्चय पर डटी रही और कहा कि अपनी लड़की की शादी मैं इसी लड़के से करूँगी। बड़ी मुश्किल से वे माने और माँ की शादी बाबा के साथ हो गई।"[3]

इस प्रसंग में नानी विचारों से स्वतंत्र है, साथ ही अपने निर्णय लेने में सक्षम भी है। इतना ही नहीं वह पति को भी अपने निर्णय का हिस्सा बना लेती है। यहाँ नानी का प्रमुख होना स्पष्ट रूप से उभर आता है।

कौसल्या की माँ के बारे में हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि उनके परिवार में मातृसत्तात्मक व्यवस्था थी। लेखिका की माँ घर, बच्चे, उनकी शिक्षा, ब्याह इतना ही नहीं तो पति के बारे में भी स्वयं निर्णय लेती है। इन निर्णयों में परिवार के सदस्य सम्मिलित हो जाते हैं। पूरा परिवार माँ के विचारों, मन के अनुकूल चलता है-

" तुम मेरे पति से इतना काम करवाती हो और उनकी कदर भी नहीं करती कई वर्षों से एक पैसा भी नहीं बढ़ाया। अब मैं यहाँ नौकरी नहीं करने दूँगी। चाहे हम भूखे ही रहे, परंतु यहाँ काम नहीं करने दूँगी।"[4]

पत्नी की बात मानते हुए लेखिका के पिता बेकरी की नौकरी छोड़कर कबाड़ी का धंधा शुरू करते हैं। इस रूप में लेखिका का परिवार मातृसत्तात्मक परिवार है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा के एक प्रसंग में बाल ओमप्रकाश की शिक्षा पैसे के अभाव में छुटने की नौबत आ जाती है। ऐसे में उनकी माँ और भाभी चाहती है कि वे आगे पढ़ें। उनकी भाभी अपना जेवर निकाल कर बेचने के लिए देती है। इस प्रसंग में ओमप्रकाश वाल्मीकि के पिता दोनों की बातें सुन अपना फैसला बदलते हैं। परिवार संबंधी निर्णयों में नारी की भूमिका दलित परिवारों की विशेषता बन जाती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के पिता बहू से कहते हैं कि "ना बहू... इसे ना बेच... मैं कुछ न कुछ करके इसे स्कूल भेजूंगा। तू फिकर ना कर... एक यही तो चीज है तेरे पास... उसे भी बेच दे... रख ले इसे।"[5]

श्यौराज सिंह बेचैन के मौसा-मौसी दिल्ली में रहते हैं। घर के सारे निर्णय वे एक दूसरे से सलाह-मशवरा करते हुए लेते हैं। एक दिन श्यौराज को स्कूल में दाखिला करवाने जाना था। पर उसी दिन वह अपने काम से समय पर वापस नहीं आ पाया। स्कूल का समय टल जाता है। तब मौसा जी श्यौराज को स्कूल भेजने की बात मन से निकाल देते हैं और श्यौराज से कहते हैं कि तुम अब नींबू ही बेचा करो। स्कूल जाने का मौका तुम्हीं ने ही गवाया है। तब मौसी जी मौसा को समझाते हुए कहती है कि, " एक बार साथ जाकर तो देख लो। इतनी भाग दौड़ की है तो थोड़ी और सही और रोज लेट थोड़े ही होगा। स्कूल में दाखिला हो जाए तो शायद इसकी बाकी जिंदगी सुधर जाए।...."[6]

हिंदी दलित आत्मकथाओं के दलित परिवारों में ऐसी स्थितियां बड़े पैमाने पर देखी जाती है, जिनमें स्त्री के विचारों का सम्मान किया गया है। उनकी बातों को निर्णय में स्थान दिया गया है। दलित परिवारों में बडे पैमाने में मातृसत्तात्मक व्यवस्था या सम्मिश्रण व्यवस्था (माता-पिता दोनों विचार विनिमय से परिवार संबंधी निर्णय लेते हैं।) दिखाई देती है। ऐसे परिवारों में स्त्री के महत्व को स्वीकारा गया है या स्त्री ने अपने महत्व को स्थापित किया है। सुशीला टाकभौरे की माता एवं अजी (शिकंजे का दर्द), मोहनदास नैमिशराय की ताई (अपने अपने पिंजरे), रूपनारायण सोनकर की भाभी (नागफनी), सूरजपाल चौहान की मां (संतप्त) ऐसे ही नारी पात्र है जो परिवार संबंधी निर्णयों में अहम भूमिका निभाते हैं। इन पात्रों की एक खास विशेषता यह भी है कि यह सारे पात्र परिवार के उदर भरण में सहायक हैं।

दलित आत्मकथाओं में चित्रित सवर्ण परिवारों की स्थिति में पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था अधिक दिखाई पड़ती है। इन परिवारों में पुरुष का आदेश अंतिम माना जाता है,चाहे वह सही हो या गलत, स्वीकार्य हो या ना हो। परिवार को ऐसे आदेश मानने पड़ते हैं। अधिकतर परिवारों में पुरुष के आदेश को स्वीकारना ही स्त्री के संस्कारी होने का सबब माना जाता है। इन परिवारों में स्त्री का स्वतंत्र व्यक्तित्व अभावात्मक ही दिखाई पड़ता है। बहुधा वह पुरुष के मतों, व्यवहारों का अनुकरण करती दिखाई देती है।

" अरे मेरी सौत चूहड़ी, तू ही पूरे गांव में एक हूर की परी है जो मेरौ आदमी तेरे संग।"[7]

सूरजपाल चौहान की आत्मकथा की उपरोक्त घटना में जय सिंह ठाकुर सूरजपाल की माता के साथ जोर जबरदस्ती करने की कोशिश करता है। बात खुलने पर जय सिंह की पत्नी अपने पति के चरित्र को जानते हुए भी उसके पक्ष में खड़ी होकर उपर्युक्त बात करती है। जय सिंह की पत्नी का अपना कोई वजूद दिखाई नहीं देता। वह पूर्ण रूप से पति के अंकित है। इसलिए वह उसकी हाँ में हाँ मिलाती है।

रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा के मिश्रा परिवार की भी यही अवस्था है। बरसात में भीगते हुए अपने गाँव जा रहे रूपनारायण और उनके बडे भाई को मिश्रा जी रोक कर अपने यहाँ रात गुजारने की मिन्नतें करते हैं। कपड़ों और देखने में दोनों भी अमीर लग रहे थे तो मिश्रा जी उन्हे न चाहते हुए भी रोक लेते हैं। मिश्रा जी का परिवार उनकी आवभगत में जुट जाता है। रात को जैसे ही उनके जाति का पता चलता है, मिश्रा उन्हें डांटकर भगाते हैं। पहले तो लेखक से न मिश्रा ने, न उनके परिवार ने जाति पूछी और अब मिश्रा के गलत होने पर भी बिना कुछ कहे परिवार गुमसुम बैठ जाता है। मिश्रा की अम्मा गंगा जल छिड़कने लगती है- " उनकी अम्मा हमारे सामने ही गंगाजल लाकर चारपाइयाँ और फर्श पर छिड़क रही थी। गंगा के उसी जल से व घर की वस्तुओं की शुद्धि करने में लगी थी...."[8]

ठीक ऐसी ही एक घटना ओमप्रकाश वाल्मीकि के आत्मकथा में आए त्यागी परिवार द्वारा ओमप्रकाश के साथ घटित होती है। मास्टर बृजपाल सिंह त्यागी ओमप्रकाश और उनके एक सहपाठी को अपने घर गेहूं लाने भेजते हैं। उनके पिता दोनों की पूछताछ कर उन्हें खाना खाने का आग्रह करते हैं। कुछ समय बाद बातों-बातों में उनकी जाति का पता चलता है तब वे दोनों को गालियां देने लगते हैं। उन्हें मारने के लिए दौडते हैं। पर इस पूरे प्रसंग में न पक्ष में, न विरोध में कोई स्त्री स्वर उभरता है। यहाँ घर की स्त्रियों की कोई भूमिका ही दिखाई नहीं देती। खाना खिलाना है तो वह खाना बना देती है, नहीं खिलाना है तो उठाकर ले जाती है। वे मात्र आदेश की गुलाम है।

"घर से बिना खाए जाओगे तो बरले में म्हारी क्या इज्जत रह जागी।"[9] -मास्टर त्यागी के पिता

उपर्युक्त प्रसंगों में स्त्री की कोई भूमिका ही नहीं दिखाई देती या फिर है तो वह परंपरा वादी पुरुष सत्तात्मक है। गाँव के परिवारों में यह स्थिति बड़े पैमाने पर दिखाई देती है। वहाँ स्त्री की दुनिया ही घर और चौके-चूल्हे तक सीमित कर दी गई है। ऐसे अधिकतर स्त्री पात्र पुरुष की हां में हां मिलाते हैं या मुक रहते हैं। शहरी परिवारों की स्थिति इससे अलग दिखाई देती हैं। वहाँ पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था होने पर भी उसकी तीव्रता कम है। इन परिवारों में स्त्री निर्णय लेती है या स्त्री पुरुष सांझा रुप में निर्णय लेते हैं, एक दूसरे की बातों की कद्र करते हैं।

आत्मकथाकार सूरजपाल चौहान अपने ही गाँव की एक अग्रवाल महिला को गाडी से गाँव छोडने के बदले चाय पिलाने की बात करता है। तब महिला कहती है, " यह गाँव है, भला यहाँ मैं घर में बैठाकर तुझे कैसे चाय पिला सकती हूँ ... अलीगढ़ मेरी ससुराल आना, वहाँ पिला सकती हूँ मैं तुम्हें चाय।"[10]

महिला का कथन गाँव और शहर के फर्क को समझाता है। हम भी पाते हैं कि शहरों में जाति, छुआ-छूत, पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था की जकड़न ढीली पड़ती दिखाई देती है। इस संदर्भ में ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा का एक प्रसंग दृष्टव्य है- हॉस्टल के वार्डन उपाध्याय ओमप्रकाश और उनके मित्र पाटिल को रात में नाटक देखने के लिए नहीं छोड़ना चाहते। लेकिन जैसे ही मिसेज उपाध्याय ओमप्रकाश का पक्ष लेती है, "अरे कैसे वार्डन हो! बच्चों को घूमने फिरने भी नहीं देते... जाओ महर्षि... लेकिन जल्दी ही लौट आना।"[11]

वार्डन उपाध्याय दिनों को नाटक देखने छोडने के लिए राजी होते है।

उपर्युक्त दोनों प्रसंगों में परिवार की महिलाएँ स्पष्ट रूप से अपनी बात कह रही है। इसे इतने में ही मातृसत्तात्मक व्यवस्था भले ही ना कहा जाए लेकिन यह उदाहरण पितृसत्तात्मक व्यवस्था में आए परिवर्तन को दर्शाते हैं। इसके लिए गाँव से अधिक शहर का वातावरण पोषक जान पड़ता है।

आत्मकथाओं के ऊपर उल्लिखित संदर्भों, उदाहरणों को देखने के पश्चात, इनका विश्लेषण करने के पश्चात् दलित, सवर्ण, ग्रामीण परिवारों तथा शहरी परिवारों के संबंध में या उनकी संप्रात स्थिति के संबंध में स्पष्ट रूप से निम्न तथ्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जिन्हें निष्कर्षात्मक रूप में रखा जा रहा है-

* दलित समाज संपत्ति विहीन होने के कारण श्रम उनकी उपजीविका का आधार है। श्रम में दलित महिलाएँ अपनी सहधर्मिता निभाती है। इसलिए अधिकतर दलित परिवारों में स्त्री की भूमिका, पक्ष को निर्णय में महत्व प्राप्त हुआ है। जिससे इन परिवारों में सम्मिश्रण पारिवारिक व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है।

* दलित समाज में जहाँ संपत्ति, भूमि पैतृक रूप में मिली है। वहाँ भी वह अल्प होने के कारण अपने कारोबार, खेती में उन्हें स्वयं ही काम करना पड़ता है। इन कामों में स्त्री पुरुष का हाथ बंटाते हुए अपना योगदान देती है। अतः ऐसे परिवारों में भी स्त्री के निर्णयों को महत्व प्राप्त होता है। इन परिवारों में भी सम्मिश्र पारिवारिक व्यवस्था दिखाई देती है।

* जिन दलित परिवारों की स्त्री उत्पादन में भी अपना योगदान देती है और स्वभावतः महत्वकांक्षी व चतुर होती है। परिवार के प्रति प्रतिबद्ध और निर्णय लेने में सक्षम होती है। ऐसे में परिवार की जिम्मेदारी उस पर आ जाती है और वह परिवार की मुखिया बन जाती है। इन परिवारों में स्पष्ट रूप से मातृसत्तात्मक व्यवस्था देखी जाती है।

* सवर्ण समाज की पारिवारिक व्यवस्था में जो परिवार शहरों में रहते हैं, जिनमें शिक्षा का पर्याप्त प्रचार-प्रसार हुआ है तथा स्त्री परिवार की आय में अपना योगदान देती है। वहाँ सम्मिश्र पारिवारिक व्यवस्था दिखाई देती है।

* जिन सवर्ण परिवारों का उदर भरण परंपरागत संपत्ति, भूमि, व्यवसाय, अधिकार या राजनीति के आधार पर होता है, उन परिवारों में पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था दिखाई देती है। ग्रामीण परिवारों में यह स्थिति अधिक तीव्रता से दिखाई देती है।

* दलित तथा सवर्ण परिवारों के नारी में स्पष्ट रूप से जो अंतर दिखाई देता है, वह है- 'मूल्य आधारित श्रम व्यवस्था'। काम दोनों भी करती है किंतु क्या वह आमदनी बन पाता है? उसका आर्थिक मूल्य है? दलित स्त्री के बारे में इसका उत्तर 'हाँ' है, जो उसे पारिवारिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण बनाता है।

संदर्भ:-

1) मनुस्मृति- टीकाकार डॉ जयकुमार जैन- साहित्य भंडार, सुभाष बजार, मेरठ-02, पृ. 19

2) दोहरा अभिशाप- कौसल्या बैसंत्री- परमेश्वरी प्रकाशन, बी-109, प्रीत विहार, दिल्ली-92, पृ. 26

3) वही

4) वही, पृ.44

5) जूठन- ओमप्रकाश वाल्मीकि - राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-02, पृ.25

6) मेरा बचपन मेरे कंधों पर- श्यौराज सिंह बेचैन- वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली -02, पृ.215

7) संतप्त- सूरजपाल चौहान- वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-02, पृ.25

8) नागफनी- रूपनारायण सोनकर- शिल्पायन, शाहदरा, नई दिल्ली-32, पृ.24

9) जूठन- ओमप्रकाश वाल्मीकि - पृ.65

10) संतप्त- सूरजपाल चौहान- पृ.65

11) जूठन- ओमप्रकाश वाल्मीकि- पृ.109

11) शिकंजे का दर्द- सुशीला टाकभौरे- वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-02

12) अपने अपने पिंजरे- मोहनदास नैमिशराय-वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-02